



# किसानों पर आंसू गैस बरसाना तानाशाह शासक के अंहकार का प्रतीक : कांग्रेस

खबर मन्त्र व्यूह

रांची। कांग्रेस ने देश के अननदाताओं पर मोदी सरकार द्वारा दमकारी नीतियों का उजर्जा विरोध किया है। किसानों पर बरसाए जा रहे आंसू गैस को पार्टी ने तानाशाह शासक के अंहकार में डबने का प्रतीक माना है। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शर्मित ने कहा कि मोदी सरकार पार्ट-2 भीषण अन्याय काल का गवाह है। देश के युवा वर्ग, नरी, किसान के अलावा समाज का अन्य तबका भी यात्रा की मांग कर हाई है, लेकिन केंद्र सरकार कान में ठालकर सो रही है। मोदी सरकार के इसी अन्याय विवादपर राहुल गांधी द्वारा भारत जोड़ो न्याय

## झारखण्ड में होनेवाले दूसरे चरण की न्याय यात्रा में राहुल गांधी नहीं होंगे शामिल

यात्रा किया जा रहा है। जिससे समाज में जन जागरण का अभियान चल रहा है।

कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शर्मित ने कहा है कि एक तरफ अपने लिए न्याय की मांग कर रहे किसानों पर दमनपूर्वक कार्रवाई की जा रही है, तो दूसरी तरफ मोदी इन सबको नन्दनअंदेज कर रहे हैं। एक तानाशाह शासक की न्याय यात्रा की किसानों के अंदरावाह तरह मोदी ने उनके दान की कार्रवाई को देखते हुए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी शामिल नहीं रहेंगे।

केंद्र सरकार के इन्हीं अन्यायों के विशुद्ध न्याय की मांग को लेकर न्याय यात्रा का दूसरा चरण झारखण्ड में प्रारंभ किया जाएगा। एक फरवरी को छत्तीसगढ़ से झारखण्ड में गढ़वा जिले के गोदरवाला और रक्त घट पाटक, गढ़वा शहर बाजार, बीं मोड़ होते हुए पलामू जिले के नावा बाजार में पहुंचेंगे, जहां रात्री विश्राम होगा। फिर 15 फरवरी को जपला मोड़ छत्तरपुर होते हुए रिहररामगंग पहुंचेंगे, जहां से यात्रा विहार को प्रवेश करेंगे। हालांकि झारखण्ड में होनेवाले दूसरे चरण की न्याय यात्रा की किसानों के अंदरावाह तरह मोदी ने उनके दान की कार्रवाई को देखते हुए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी शामिल नहीं रहेंगे।

## झारखण्ड सरकार, गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग झारखण्ड आन्दोलनकारी विहितीकरण आयोग

63वीं औपचारिक सूची जिला-खेती

| क्रमांक | आनंदनकारी की विवरणी  | गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, राजीव गांधी सेक्टर संस्थान -1338, दिनांक-20.04.2021 के अनुसार दिया गया वर्णन |
|---------|--|---|
| 1.      | 1. अवैदेक-सातानु युक्त, वित्त-स्थल दिल्ली मुम्पा<br>2. याम-मेहा, पोर्ट-कोने, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>3. लिंग-पुरुष, आयु-74 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।   | कांडिका-2(ix)   |
| 2.      | 1. अवैदेक-10/10-24<br>2. अवैदेक-सुसानी खाली, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>3. लिंग-मालिता, आयु-53 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में गोदान।  | कांडिका-2(ix)   |
| 3.      | 1. अवैदेक-11/11-24<br>2. अवैदेक-सातानु खाली, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>3. लिंग-मालिता, आयु-61 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का विन्ह।   | कांडिका-2(ix)   |
| 4.      | 1. अवैदेक-12/12-24<br>2. अवैदेक-जानी सातानु, वित्त-सुसील सांगा<br>3. याम-काला मुक्तियां, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-53 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में गोदान।                      | कांडिका-2(ix)   |
| 5.      | 1. अवैदेक-13/13-24<br>2. याम-काला मुक्तियां, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>3. लिंग-मालिता, आयु-53 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में कलात का दान।  | कांडिका-2(ix)   |
| 6.      | 1. अवैदेक-14/14-24<br>2. अवैदेक-बहाने धान, पति-सुनील धान<br>3. याम-देवगोदा, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-50 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में धान का दान।                              | कांडिका-2(ix)   |
| 7.      | 1. अवैदेक-15/15-24<br>2. अवैदेक-हामीन विन्ह, वित्त-स्थल मंगर विन्ह<br>3. याम-मालिता, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-72 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बेहड़े में कलात का दान।                       | कांडिका-2(ix)   |
| 8.      | 1. अवैदेक-16/16-24<br>2. अवैदेक-दासी मुक्तियां, पति-सुनील मुक्तियां<br>3. याम-देवगोदा, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-परियागढ़, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-48 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में धान का दान।     | कांडिका-2(ix)   |
| 9.      | 1. अवैदेक-17/17-24<br>2. अवैदेक-जानीन मुक्तियां, पति-सुहाराई मुक्तियां<br>3. याम-देवगोदा, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-जरियागढ़, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-56 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ का दान।          | कांडिका-2(ix)   |
| 10.     | 1. अवैदेक-18/18-24<br>2. अवैदेक-जानीन मुक्तियां, पति-जोहाना मुक्तियां<br>3. याम-देवगोदा, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-जरियागढ़, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-56 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ का दान।           | कांडिका-2(ix)   |
| 11.     | 1. अवैदेक-19/19-24<br>2. अवैदेक-मालिता मुक्तियां, पति-यामायां मुक्तियां<br>3. याम-देवगोदा, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-मुक्ति, प्रखण्ड-मुक्ति<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-54 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-दाहिने हाथ में धान का दान। | कांडिका-2(ix)   |
| 12.     | 1. अवैदेक-20/20-24<br>2. अवैदेक-सातानु होरी, पति-यामायां होरी<br>3. याम-देवगोदा, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-जरियागढ़, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-47 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बेहड़े में होरी का दान।            | कांडिका-2(ix)   |
| 13.     | 1. अवैदेक-21/21-24<br>2. अवैदेक-सातानु होरी, पति-लेदा चुप्पा<br>3. याम-मेहा, पोर्ट-कोने, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-62 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-कपात में होरी का दान।                                   | कांडिका-2(ix)   |
| 14.     | 1. अवैदेक-22/22-24<br>2. अवैदेक-सातानु होरी, पति-यामायां होरी<br>3. याम-काला, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-जरियागढ़, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-54 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।                            | कांडिका-2(ix)   |
| 15.     | 1. अवैदेक-23/23-24<br>2. अवैदेक-मुक्तियां, पति-कल्पना मुक्तियां<br>3. याम-दिवागोदा, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-57 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।                                     | कांडिका-2(ix)   |
| 16.     | 1. अवैदेक-24/24-24<br>2. अवैदेक-जानीन मुक्तियां, पति-कल्पना मुक्तियां<br>3. याम-छाता, पोर्ट-चाला, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-40 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।                                      | कांडिका-2(ix)   |
| 17.     | 1. अवैदेक-25/25-24<br>2. अवैदेक-जानीन मुक्तियां, पति-कल्पना मुक्तियां<br>3. याम-छाता, पोर्ट-चाला, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-57 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।                                      | कांडिका-2(ix)   |
| 18.     | 1. अवैदेक-26/26-24<br>2. अवैदेक-लाला धान, पति-स्थल धान<br>3. याम-मोक्तियां, पोर्ट-चाला, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-50 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।  | कांडिका-2(ix)   |
| 19.     | 1. अवैदेक-27/27-24<br>2. अवैदेक-प्राणी धान, पति-विन्ह-सुरेंद्र<br>3. याम-मालिता, पोर्ट-चाला, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-41 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाया सुटाना में धान का दान।                          | कांडिका-2(ix)   |
| 20.     | 1. अवैदेक-28/28-24<br>2. अवैदेक-प्राणी धान, पति-विन्ह-सुरेंद्र<br>3. याम-मालिता, पोर्ट-चाला, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-59 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-कपात में धान का दान।                                 | कांडिका-2(ix)   |
| 21.     | 1. अवैदेक-29/29-24<br>2. अवैदेक-लाला धान, पति-विन्ह-सुरेंद्र<br>3. याम-मेहा, पोर्ट-कोने, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-41 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-दाहिने हाथ में धान का दान।                               | कांडिका-2(ix)   |
| 22.     | 1. अवैदेक-30/30-24<br>2. अवैदेक-प्राणी धान, पति-विन्ह-सुरेंद्र<br>3. याम-मेहा, पोर्ट-कोने, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-पुरुष, आयु-78 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाया साथ में धान का दान।                               | कांडिका-2(ix)   |
| 23.     | 1. अवैदेक-31/32-24<br>2. अवैदेक-मालिता देही, पति-विन्ह-नरेंद्र महाली<br>3. याम-मालिता, पोर्ट-मोक्तियां-सुरेंद्र, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-43 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-दाहिने हाथ में धान का दान।      | कांडिका-2(ix)   |
| 24.     | 1. अवैदेक-33/34-24<br>2. अवैदेक-हमारी कुतुर, पति-जेवियर मिज<br>3. याम-मालिता, पोर्ट-विन्हाय, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-43 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।  | कांडिका-2(ix)   |
| 25.     | 1. अवैदेक-34/34-24<br>2. अवैदेक-मुक्तियां-मुक्तियां, पति-आक्रम मुक्तियां<br>3. याम-छाता, पोर्ट-छाता, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता<br>4. लिंग-मालिता, आयु-67 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-अकिन नहीं।                                  | कांडिका-2(ix)   |
| 26.     | 1. अवैदेक-35/35-24<br>2. अवैदेक-मालिता धान, पति-लेदा धान<br>3. याम-मेहा, पोर   |   |











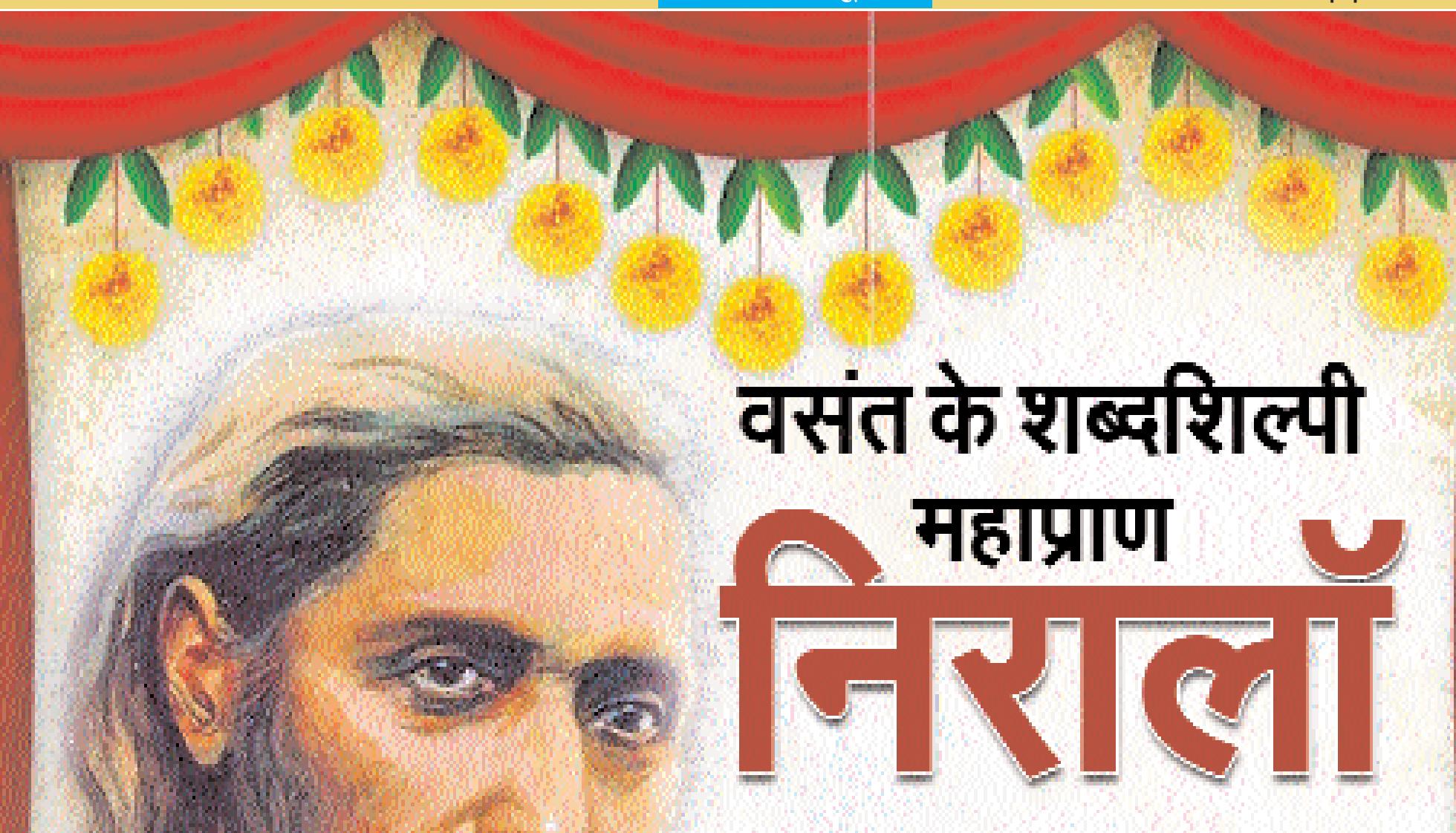












# वसंत के शब्दशिल्पी महाप्राण निराला

ऋ

अण्ण कुमार दत्ते

तुराज वसंत का आगमन हो चुका है। मधुरिमा, सरसता एवं हरीतिमा से सुसज्जना धरा के कण में सौदर्य प्रस्फुटित हो रहा है। प्राणवंत प्रकृति का लावण्य चतुर्दिक् निवार उठा है। वसंत ने सारी सुष्ठु में मधुर संगीत भर दिया है। वन जगन कोयल की कूक से आळादित हो रहे हैं। रंग और सुंगंध से सराबोर वसंत के आगमन पर स्वप्नावित धरित्री सींगीतमय हो जाम रही है। जब जब वसंत त्रूप आती है तब तब हिन्दी साहित्य रसिकों की चेतना में महाप्राण कवि सूर्यकन्त त्रिपाठी निराला की थे पक्षियां गूँजने लगती हैं

सखि, वसंत आया।

भरा हर्ष वन के मन

नवोकर्ष छाया।

किसलय-वसना नव-वय लिंका

मिली मधुर ग्रिय-उर तरु पतिका

मधुर-वृद्ध ब्रदी

पिक-त्वर नभ सरसाया।

वसंत त्रूप निराला की घड़कनों में बसती थी। निराला ने 'हिंदी' की सुप्रिया के प्रति पत्र' कविता में लिखा था ही ज्ञामै मैं वन सर का अग्रदूत। वसंत पर निराला ने श्रेष्ठतम गीत लिख दिये हैं। घनघोर अभावों का सामना करने के बावजूद उनकी चेतना में वसंत की महक विद्यमान रही। अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य से सबको सम्मोहित करती वसंत त्रूप के समान ही निराला ने अपनी अनुपम कविताओं से हिंदी की साहित्य जगत को सम्मोहित किया। वसंत पंचमी के साथ महाकवि निराला का अप्रतिम लगाव था। वाणी के बदर पुत्र कविवर 'निराला का जन्मदिन भी वसंत पंचमी को ही मनाया जाता है' उनका जन्म वैसे तो माघ शुक्ल एकादशी, संवत् 1955 तदनुसार इंग्रेस फरवरी 1899 ई. को हुआ था, लेकिन उन्होंने स्वच्छा से वसंत पंचमी को अपना जन्म दिन घोषित किया था। 1930 ई. में गंगा पुस्तकमाला के प्रकाशक दुलारे लाल भागव ने वसंत पंचमी के दिन गंगा पुस्तकमाला को महोसूल और अग्ना जन्मदिन मनाया था। इस अवसर पर निराला ने भी एक निंबंध पढ़ा। डॉ. रामविलास शर्मा बताते हैं कि उन्होंने देखा कि दुलारेलाल भागव वसंत पंचमी को अपना जन्मदिवस मनाते हैं। उन्होंने निश्चय किया कि वह भी वसंत पंचमी को ही पैदा हुए थे। वसंत पंचमी सरस्वती पूजा का दिन, निराला सरस्वती के बदर पुत्र, वसंत पंचमी को न पैदा होते हो जाएं। प्रसाद तक निराला ने अपना जन्मपत्र नए सिरे से लिख डाला हूँ आय के लेख को बदलने की कवि की इस अद्भुत जिद के कारण ही गंगा प्रसाद पांडिय ने 'निराला' को महाप्राण कहा था।

वसंत के जितने मोहक काव्य चित्र निराला ने प्रस्तुत किये हैं उनमें शायद ही किसी ने किये हों। वसंत अपने पूरे रंग वैभव के साथ उके गोंतों में नज़र आता है। वसंत में धर्ती पृथग रंग जाती है, विश्व के अंतर्माला की लालिमा निखर जाती है। वसंत की सुप्रामा का यह अनूदान चित्र दृष्टव्य है।

रंग गई पग-पा धर्य धरा  
हुई जग जगमग मनोहरा।  
वर्ण गंध धर, मधु-मरन्द भर  
तर रंग की अरणिमा वर्ण  
खुली रूप कलियों में पर भर  
स्तर-स्तर सुपरिस्मा।

गूँज उठा पिक-पावन पंचम  
खगा-कुल-कलरव मूदुल मनोरम,  
सुख के भव कांपती प्रणय-क्लम  
वन श्री चारुतरा।

सुष्ठु के कण-कण में छिपा सौंदर्य वसंत

के रंग-बिरंगे फूलों के भीतर प्रस्फुटित हो उठा

है। ऐसा लगता है मानो फूलों के चेहरों पर

स्वर की मादकता हमारी नस नस में घुल जाती है। प्राणों के भीतर अनहदनाद गुणात ने लगाता है। कवि लिखता है

कु-ज-कु-ज कोयल बोली है,  
स्वर की मादकता घोली है।

कांपा है घन पल्लव-कानन,  
गूँजी गुहा श्रवण-उन्मादन,

तने सहज छावन-आच्छादन,

नस ने रस-वशता तोली है।

स्नो से सिंचित करने वाली त्रूप है।

वसंत। इसके आगमन मार से हमारी रोगों में उल्लास का संचार होने लगता है। रसेंद्रेक का

चमकरिक प्रभाव प्रकृति में इस प्रकार

परिलक्षित होने लगती है।

फिर बेले में कलियां आईं।

डालों की अलिया मुस्काई।

सींचे बिना रहे जो जीते,

स्फीत हुए सहस्र रस पीते

नस-नस दोड़ गई है खुशियां

नैहर कलियाँ लहारैं।

कवि जीवन भर अभावों के भीतर दंश

झेलता रहा मगर जीवन में बीते कुछ वासंती

श्रृंगार, रहा जो निराकार,  
रस कविता में उच्छ्रसित धार  
गाया स्वर्गीय प्रिया-संगा-  
भरत प्राणों में राग झूं रंग,  
रति रूप प्राप्त कर रहा वही,  
आकाश बदलकर बना मही।

उनकी अनेक कविताओं में वसंत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का स्तवन किया गया है। सरस्वती की आराधना करके सर्वों को उपन्यासों तथा 'लिली', 'चतुरी चमार', 'सुकुल की बीबी', 'सखी' और 'देवी' नामक कहानों संग्रहों का सुनन किया। 'मतवाला' व 'समवय' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। ये पदों में लिखी गई तुलसीदास निराला की सबसे बड़ी कविता है।

'अणिमा', 'बेला', 'नए पत्ते', 'गीत कुंज', 'आराधना', 'सांच्य काकली', 'अपरा' जैसे काव्य-संग्रहों रचना की। 'अप्सरा', 'अलका', 'प्रभावती', 'निरुपमा', 'कुली भट' और 'बिल्लेसुर' 'बकरिहा' शीर्षक से उपन्यासों तथा 'लिली', 'चतुरी चमार', 'सुकुल की बीबी', 'सखी' और 'देवी' नामक कहानों संग्रहों का सुनन किया। 'मतवाला' व 'समवय' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। ये पदों में लिखी गई तुलसीदास निराला की सबसे बड़ी कविता है।

निराला का साहित्य प्रकृति सौंदर्य, प्रेम के औदात्य, आध्यात्मिकता, राष्ट्रप्रभाव, सामाजिक चेतना एवं मानवीय संवेदना से संबोधता है। साहित्य जगत का अपनी अविसरणीय रचनाओं से वसंत का असास कराने वाले इस महाप्राण कवि का व्यक्तिगत जीवन अभावों एवं कष्टों से भरा रहा। मगर बेबाकी एवं फक्कड़ियां से भरा यह कवि समझौतापरस्त नहीं बना। ठिठुराती सर्वी में एक असहाय वृद्धांक के मुख बोलती थी। मार स्वराचार का वसंत पर अतिशय अनुग्रह है। वसंत की सुष्ठुजित माला धारण कर वह वरदायिनी बनती है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यशस्वी वाइस चॉसलर अपराधान्य ज्ञाने ने एक बार निराला को अंग्रेजी में पत्र लिखकर अपने भर पर काव्य पाठ के लिए निर्मात्रित किया। शिक्षा, संस्कृत और प्रशासकीय सेवाओं के क्षेत्र में अपनाया ज्ञानी तृतीय बोलती थी। मार स्वराचारी निराला सरीखे कवि को यह गवारा न था कि पद या सम्पन्नता के गुणान में कवि दरबार आयोजित करने वाले प्रभावशाली व्यक्ति के घर हाजरी बजाकर भांडवत काव्यपाठ करें।

उन्होंने जीवाच भेजा ज्ञाहाई एवं गीत अपने भर अंग इन्सिलेश, आई वाज ऑनर्ड बाई और इनविटशन टू रिसाइट माई पैम्यस एवं योर हाउस। हाउ एवर मोर ऑनर्ड आई विल फील इफ यू कम टू माई हाउस टू लिसिन टू माई पैम्यस इह (मैं गीरीब अंग्रेजी का धनिक हूँ।)

आपने मुझे अपने घर आकर कविता सुनाना का निमत्रण दिया मैं गौरवान्वित हुआ। लिकन मैं और अधिक गौरव का अनुभव करूँगा वह दिया आप मेरे घर आकर मेरी कविता सुनूँग।

निराला से घर आकर जीवन में बदलने का अपने घर आकर कविता सुनाना का निमत्रण दिया मैं गौरवान्वित हुआ। लिकन मैं और अधिक गौरव का अनुभव करूँगा वह दिया आप मेरे घर आकर मेरी कविता सुनूँग।

परिचय देते हुए निराला ने कहा, हमें जीवन के बाप-दादों की पालकों आपके बाप-दादों के बाप-दादों द्वारा यहाँ कवि परंपरा पर गर्व करने वाले निराला का वसंत का संकेत किया। जब राजा छलकासाल ने कवि भूषण की पालकी स्वयं उठा ली थी।

जीवनपरन्त साहित्य इसिकों को वासनी शब्दपुणों से स्वप्नावित करने वाले शब्दशिल्पी निराला के जीवन में मात्र 22 वर्ष की अपायु में पत्नी के चिरविवेग से पतझड़ आ गया और उसके बाद बिट्टिया सरोज के असामिक निधन से यह पतझड़ स्थार्थ बन गया। दुर्दते दुर्भाग्य के प्रबल

प्रहारों को झेलते झेलते आखिर शोक संतप्त निराला की मनोदासा व्यथा एवं वेदना से टूट-सी गई।

1961 को यह अमर कवि इस लोक से विवाह हो गया। निराला वाकई निराला ही थे उनकी स्मृति आते ही हमारे चित्त में वसंत की सुरुचि और सौंदर्य मर्मिनां हो उठते हैं।

हमारा अंतस स्वत ही गुनगुने लगता है। अभी न होगा मेरा अंत, अभी अभी ही तो आया है, मेरे घर में मृदुल वसंत, अभी अभी मौरा भांत

(जन्म दिन वसंत पंचमी पर विशेष)



